आज का पुरुषार्थ 7 Nov 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज सारा दिन हल्के रहते हुए फ़रिश्ता स्वरुप द्वारा सर्व आत्माओं के ऊपर सुख शान्ति की बरसात करने का पुरुषार्थ करे "*

हम बाबा के बच्चे मास्टर क्रियेटर है। किसी भी स्थान के **vibrations को create** करने की क्षमता हमारे पास है। हम अपनी इस क्षमता का प्रयोग करे।

हमें एक बहुत बड़ा **महान कर्तव्य मिला है**, सृष्टि को नूतन बनाने का। भगवान के साथ हमें यह महान कार्य करना है। हम सभी को अपने घरों में, परिवारों में, अपने सेवास्थानों पर **वायब्रेशन्स को रूहानियत से भरपूर करना है।**

जहाँ रूहानियत से भरे हुए वायब्रेशन्स होते है, वहाँ सभी कार्य बिल्कुल सहज हो जाता है। **देवकुल** की आत्माओं को वहाँ आकर्षण होने लगता है। और सेवाओं में वृद्धि होने लगती है।

किसी भी स्थान के वायब्रेशन्स यदि रूहानियत से भरपूर है, तो वहाँ की सेवायें दिन गुनी रात चौगुनी बढ़ जाती है। इसलिए सेवाओं पर पैसा खर्च करना, बहुत भागदौड़ करना ...

... इससे भी कोई सुलभ तरीका है के हम अपने स्थानों पर **रूहानियत** का माहौल बनाये। कैसा बनता है यह माहौल? व्यक्तिगत रूप से भी इसको किया जाये ..

हम जितना-जितना **योगयुक्त** रहते है और जितना उस स्थान पर व्यर्थ बातों से मुक्त **अन्तर्मुखी** रहते है, रूहानियत का वातावरण बनता जाता है।

हम अपने साथियों को **आत्मिक दृष्टि** से देखते है। और स्वयं भी अशरीरी होने का अभ्यास करते है, तो वातावरण में रूहानियत फैलती जाती है।

जिस स्थान पर बहुत अच्छा **योग अभ्यास** होता हो, वहाँ के वायब्रेशन्स रूहानियत से भरपूर, सबको आकर्षित करने वाले होते है। हमें अपने स्थानों को light house, might house और peace house बनाना है।

अपने स्थानों को ऐसा बनाना है जहाँ आते ही लोगों के विघ्न नष्ट हो जायें। हमें इन स्थानों को ऐसा बनाना है जहाँ आते ही मनुष्य के चित के अज्ञान अंधकार, विकारों की छाया समाप्त हो जायें।

तो आइये हम स्वयं को इस कार्य के जिम्मेदार समझते हुए, स्वयं में रूहानियत भरें। अपने घरों में रूहानियत का माहौल बनाये। और अपने **सेवास्थान को भी रूहानियत के तरंगों से ओतप्रोत करे।**

हम नियम बना ले कि अब व्यर्थ से हमारा कोई नाता नहीं है। हम अपने श्रेष्ठ स्थानों पर व्यर्थ की लेन-देन नहीं करेंगे, तेरे-मेरे में नहीं रहेंगे। छोटे विचार या निगेटिव विचारों में नहीं रहेंगे।

क्योंकि यही चीजें हमारी वातावरण को भारी करती है। हम सांसारिक बना देता है। हम, जिनकी ओर सारा संसार प्यासी नजरों से देखेगा, अब भी देख रहा है ..

हम सभी को अपने महान कर्तव्य को पूर्ण करना है। हम याद रखेंगे, बाबा के वे महावाक्य →

" बच्चे, तुम्हारी सकाश की संसार को बहुत बहुत जरूरत है "

जब दुःखी होकर भक्त आत्मायें बाप को याद करती है .. तब बाप बच्चों को याद करते है ..

" इन्हें सकाश दो "

कितने महान है हम सभी जिनके द्वारा भगवान अपना महान कार्य कराना चाहते है। तो हम अपने को सक्षम बनायें। और विशेष रूप से ..

" जहाँ अनेक आत्मायें दुःखों से भरपूर हो गये है .. जहाँ आत्माओं को कोई सहारा नज़र नहीं आता है "

हम सकाश दे, **फ़रिश्ता** बनकर उनके पास पहुँचे, उनके सिर के ऊपर विचरण करें, उन्हें सुख-शान्ति-शक्ति की किरणें दे .. ताकि उन्हें सहारे की अनुभव हो सके।

क्योंकि भगवान को पुकार-पुकार के वह थक चुके है →

तो आज सारा दिन हर घन्टे हम उन पीड़ित व्यक्तियों को सकाश देंगे। कभी इस तरह →

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. मास्टर दुःख हर्ता हूँ "

.. और योग लगायेंगे और practise करेंगे ..

" मेरे मस्तक से किरणें निकलकर उन सभी पर पड़ रही है "

दूसरा अभ्यास करेंगे →

" मैं फ़रिश्ता .. आकाश में विचरण कर रहा हूँ .. बाबा से शान्ति की किरणें मुझ पर पड़ रही है .. और मुझ से निकल वह किरणें नीचे सब पर पड़ रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org